वर्ष :: 33 अंक : 05
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

समस्त सुधी पाठकों व शुभचिंतकों को छठ महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं !

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक
/mithilavarnan

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

बोकारो :: रविवार, 30 अक्टूबर, 2022 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

लापरवाही का दूसरा नाम सदर अस्पताल

ये ठीक नहीं... डॉक्टरों की अनदेखी जान पर भारी, एक महीने में चार मरीजों ने दम तोड़ा

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : डॉक्टर को लोग धरती का भगवान मानते हैं। आज भी बहुत से ऐसे चिकित्सक हैं, जिन्होंने इस गरिमा, विश्वास और मानवता को बचाकर रखा है। परंतु, अधिकतर तो ऐसे हैं, जिनके लिए मरीज मतलब ग्राहक और अस्पताल मतलब सिर्फ दुकान ही रह गया है। यही वजह है कि बिल बढ़ाने के लिए वे मरीजों को ज्यादा से ज्यादा दिन तक अपने पास रखवाने को विवश करते हैं या शरीर से फिजूल की छेड़छाड़ करवाकर उनकी जान से भी खिलवाड़ करते हैं। कई दफा तो मुर्दे को भी बिल बनाने के लिए जिन्दा बताकर अपने यहां बंधक बनाए जाने के मामले सामने आ चुके हैं। निजी अस्पतालों में ऐसी शिकायतें आम हैं। ऐसे में सरकारी अस्पतालों के प्रति ही लोगों का, खासकर गरीब तबके के मरीजों का विश्वास बना है। उन्हें यह लगता है कि कम से कम यहां बिल बढ़ाने के लिए अतिरिक्त परेशानी नहीं झेलनी पड़ेगी, लेकिन जब सरकारी अस्पताल की चिकित्सा व्यवस्था भी अमूमन सरकारी कामकाज की ढुलमुल स्थिति की तरह हो जाय और वहां भी सरकारी योजनाओं की तरह स्वास्थ्य सेवाओं में शिथिलता बरती जाय, तो इसे दुर्भाग्यपूर्ण ही माना जाएगा। दुर्भाग्यवश, बोकारो के सदर अस्पताल की यही स्थिति है। दूसरे शब्दों में कहें, तो यहां लापरवाही का दूसरा नाम सदर अस्पताल हो चुका है।

बोकारो सदर अस्पताल में समय-समय पर चिकित्सकीय लापरवाही के ऐसे-ऐसे मामले सामने आते रहे हैं, जो चिकित्सा पेशा के साथ-साथ इंसानियत के लिए भी किसी कलंक से कम नहीं। यहां चिकित्सकों की मनमौजी और विभागीय लापरवाही का दुष्परिणाम मरीजों की मौत के रूप से सामने आता है। एक तो यहां रेफर-रेफर का पुराना खेल, ऊपर से गंभीर स्थिति के बावजूद मरीजों की घोर अनदेखी। सारा खेल पैसे के लिए होता है। आश्चर्य की बात तो यह है कि जिले के आला अधिकारी सब कुछ जानते हैं, समझते हैं, परंतु ठोस कार्रवाई के प्रति शायद संजीदा नहीं हैं। अभी हाल की बात है, डॉक्टरों की लापरवाही और कुव्यवस्था के कारण गुरुवार से शनिवार तक महज 48 घंटे के भीतर तीन लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी।

27 अक्टूबर की अहले सुबह 3 बजे चास प्रखंड के दुगार्पुर निवासी गोपाल दास की मां धानी दास की मौत हो गई। बीमार होने के कारण महिला की हालत काफी गंभीर थी, पर चिकित्सक के समय नहीं आने के कारण उसकी मौत हो गई। इसके बाद 28 अक्टूबर को धर्मपुरा निवासी ए के सिंह के बेटे 35 वर्षीय सुंदर सिंह की मौत हो गई। उसे बीपी सहित कई अन्य बीमारी थी। आरोप है कि अस्पताल की अव्यवस्था के कारण उसकी मौत हो गई। इसी प्रकार उसी दिन ही गोविन्द रजक की 19 वर्षीय पत्नी खुशबू को पेट दर्द की शिकायत पर अस्पताल की आईसीयू में भर्ती कराया गया था। असहनीय पीड़ा में भी उसे किसी ने गंभीरता से नहीं लिया। परिणामस्वरूप खुशबू ने दम तोड़ दिया। शनिवार को आइसीयू की एएनएम ने सवा 3 बजे बताया कि दोपहर 12 बजे डॉक्टर आए थे, उसके बाद से कोई डॉक्टर नहीं आए।

दो डॉक्टरों की ड्यूटी, पर एक ही आते

शनिवार की बात करें, तो उस दिन अस्पताल एक ही डॉक्टर के भरोसे इमरजेंसी, आइसीयू, एसएनसीयू, वार्ड, ओटी व ड्रेसिंग का भी काम कराया गया। यानी सदर अस्पताल में डॉक्टरों की कमी है, जिसे सिविल सर्जन भी मानते हैं। अगर इस दौरान दो डॉक्टरों को ड्यूटी दी जाती है, तो एक ही डॉक्टर काम पर आते हैं। यानी डॉक्टर साहब रोस्टर के अनुसार नहीं, अपने मर्जी से अस्पताल की ड्यूटी करते हैं। पर्व-त्योहार के समय तो डॉक्टर अपनी ड्यूटी निभाने की बजाय बगैर किसी सूचना के मनमर्जी तरीके से अवकाश पर भी चले जाते हैं। ऐसे में अगर चाइल्ड स्पेशलिस्ट के डॉक्टर आईसीयू में किसी बुजुर्ग मरीज का इलाज करेंगे, तो वह इलाज कैसा होगा, इसका सहज अंदाजा लगाया जा जा सकता है।

बेवजह रेफर करना बनी परिपाटी

बता दें कि सदर अस्पताल में मरीजों की जांच करने की बजाय उसे रेफर करने की परिपाटी भी अब आम हो चली है। आश्चर्य की बात तो यह है कि इस काम में अस्पताल के सर्वेसर्वा का पद संभालने वाले स्तर के पदाधिकारी भी लिप्त रह चुके हैं। अगर कोई मरीज अस्पताल में भर्ती है, तो उसे इलाज की सुविधा देने की बजाए अपने या अपने किसी चहेते के निजी अस्पताल में महज इसलिए रेफर कर दिया जाता है कि मरीजों को सदर में न देखना पड़े और अपना धनोपार्जन भी हो सके। ऐसे में गरीब व्यक्ति जो महंगे अस्पताल में अपने मरीज का इलाज नहीं करा सकते है, तो उन्हें जबरन रिम्स रेफर कर दिया जाता है। सदर अस्पताल की एसएनसीयू में 27 अक्टूबर को जितेंद्र कुमार की पत्नी राधा को प्रसव के बाद उसके बच्चे का वजन कम होने के कारण उसे एसएनसीयू में भर्ती कराया गया था, जिसके बाद डॉक्टर ने यह कहते हुए उसे रेफर कर दिया कि बच्चे की देखरेख में एक डॉक्टर हमेशा चाहिए, जो यहां संभव नहीं है, इस वजह से उसे रिम्स में रेफर कर रहे है।

पिछले माह भी हुई थी मौत

बोकारो के सदर अस्पताल में पिछले महीने भी लापरवाही ने दुग्दा निवासी सनोज सिंह (39) नामक एक मरीज की जान ले ली। आरोप था कि युवक की मौत इलाज के अभाव में हो गई। सनोज को बुखार और छाती में दर्द की शिकायत होने पर भर्ती कराया था। उसकी पत्नी अन्नू सिंह का कहना था कि वह 24 घंटे तक अस्पताल में अपने पति के इलाज के लिए डॉक्टरों के सामने फरियाद करती रही, लेकिन किसी भी डाक्टर ने गंभीरता नहीं दिखाई। अंततः उसके पति ने दम तोड़ दिया।

इधर, सीएस का दावा- बेहतर सेवा देने की कर रहे कोशिश

सदर अस्पताल में एक तरफ जहां चिकित्सकीय लापरवाही के आरोप और लगातार मौत के मामले सामने आ रहे हैं, वहीं दूसरी ओर जिले के स्वास्थ्य महकमे के अगुवा सिविल सर्जन का दावा है कि विभाग बेहतर सेवा देने की कोशिश कर रहा है। सिविल सर्जन डॉ. अभय भूषण प्रसाद ने माना है कि सदर अस्पताल में डॉक्टरों की कमी है, पर उनका यह भी कहना है कि अस्पताल में जितने डॉक्टर हैं, उनसे ही काम लिया जा रहा है। यही वजह है कि दोपहर 3 बजे से रात 9 बजे, रात 9 बजे से सुबह 9 बजे तक एक-एक से ही डॉक्टर से काम लिया जा रहा है। जहां तक महिला के प्रसव का सवाल है, तो उसके लिए ऑन कॉल में महिला चिकित्सक को बुलाया जाता है। फिर भी बेहतर सेवा देने का प्रयास करते है।

वेदर रिपोर्ट मौसम ने ली करवट, राज्य के सभी जिलों में तापमान हुए कम; सुबह-शाम अब महसूस हो रही कनकनी

सीतरंग से शीत... 15 दिन में 10 डिग्री तक लुढ़का पारा

संवाददाता

रांची/बोकारो : राजधानी रांची और बोकारो सहित झारखंड के कई जिलों में पिछले एक हफ्ते से मौसम ने करवट ली है। रांची सहित अन्य जिलों में ठंड का असर अब धीरे-धीरे दिखने लगा है। सीतरंग साइक्लोन के आने के बाद तापमान में गिरावट दर्ज की गई है और शीत का अहसास होने लगा है। एक पखवाड़ा पहले तक जहां न्यूनतम तापमान 26 डिग्री सेल्सियस था, वही अब घटकर 16-17 डिग्री तक पहुंच चुका है। यानी 15 दिन में न्यूनतम 15 डिग्री सेल्सियस तक लुढ़क चुका है। सुबह-शाम अब सिहरन महसूस होने लगी है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार आनेवाले दिनों में रांची समेत अन्य जिलों का पारा

और गिर सकता है। रांची मौसम विज्ञान केंद्र, रांची के निदेशक अभिषेक आनंद ने बताया है कि रांची में अधिकतम तापमान 27 से 29 डिग्री के बीच रहेगा, जबकि न्यूनतम तापमान 14 से 16 डिग्री तक रहेगा।

अगले कुछ दिनों में तापमान में गिरावट के साथ ही सुबह में धुंध रहेगा। दिन चढ़ने के साथ आसमान साफ हो जाएगा। मौसम शुष्क रहेगा। इसके बाद तापमान में गिरावट दर्ज की जाएगी। रांची सहित आसपास के जिलों में सुबह-शाम कनकनी शुरू हो गई है। रांची का न्यूनतम तापमान 15.6 डिग्री पर पहुंच गया है। अगले कुछ दिनों में रांची का न्यूनतम तापमान 13-14 डिग्री और बोकारो में 16 डिग्री तक पहुंचने का अनुमान है।

– संपादकीय –

महंगाई पर आस्था भारी

वैश्विक महामारी कोरोना की भयानक त्रासदी झेलने के दो वर्ष बाद इसबार दुर्गापूजा और दीपावली का उत्सव हम सब ने काफी उत्साह के साथ मनाया। आगे बिहार-झारखंड के साथ-साथ पूरे भारतवर्ष में हिन्दुओं की आस्था का महापर्व छठ मनाने को लेकर भी व्यापक तैयारियां की जा चुकी हैं। चार-दिवसीय इस महापर्व का शुभारंभ भी हो चुका है। लेकिन, खास बात यह है कि इस बार चरम सीमा को पार करती महंगाई पर लोगों की आस्था भारी पड़ रही है। केन्द्र और राज्य सरकारों को भी पता है कि दुर्गापूजा, दीपावली और छठ के अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों में जीविकोपार्जन करने वाले बिहार-झारखंड के लाखों लोग अपने घरों को लौटते हैं। ऐसे अवसरों पर सरकार की ओर से इन यात्रियों की सुविधा के लिए तरह-तरह के संसाधन उपलब्ध कराने को लेकर बड़े-बड़े दावे किये जाते हैं, लेकिन घोषित सुविधाओं के नाम पर यदि इन यात्रियों को लूटा जाय तो इसे कदापि उचित नहीं कहा जा सकता है। इसबार ऐसा ही हुआ है। मिथिलांचल के दरभंगा से उड़ान योजना के तहत देश के कई महानगरों के लिए विमान सेवा शुरू तो की गई, लेकिन यहां की हवाई सेवा यात्रियों की जेब पर भारी पड़ रही है। फिलहाल दरभंगा से दिल्ली, हैदराबाद और बेंगलुरू के लिए हवाई सेवा में यात्रियों की सबसे अधिक भीड़ होती है। लेकिन हाल के दिनों में बिहार और झारखंड जाने वाले हवाई किराए में करीब तीन गुना अधिक की वृद्धि हो चुकी है। इसी प्रकार पर्व के अवसर पर दर्जनों स्पेशल ट्रेनें चलाई जा रही हैं, लेकिन सारे इंतजामात के बावजूद यह अपर्याप्त साबित हो रहे हैं। सच कहें तो कोरोना महामारी रेल मंत्रालय के लिए एक वरदान साबित हुआ है। क्योंकि, इससे पहले भारतीय रेल में वरिष्ठ नागरिकों के साथ-साथ कई अन्य प्रकार के यात्रियों के लिए रियायत की सुविधा उपलब्ध थी, जिसे कोरोना के नाम पर स्पेशल ट्रेनें चलाकर समाप्त कर दी गई। अपने देश से कोरोना की अब लगभग वापसी हो चुकी है। सब कुछ पहले की तरह सामान्य हो चुका है, परन्तु रेल मंत्रालय शायद अभी भी पुरानी सुविधाओं को बहाल करने के पक्ष में नहीं है। इधर, छठ पर्व के अवसर पर बाजार में ग्राहकों को लूटा जा रहा है। साग-सब्जियों और फलों की कीमतें आसमान छू रही हैं। फिर भी आसमान छूती महंगाई पर लोक आस्था भारी पड़ रही है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

ठहरिए, ये मासूम हैं...

अनुशासन के नाम पर बच्चों को शारीरिक दंड देना कानूनन जुर्म

अभिव्यक्ति

– डॉ. प्रभाकर कुमार –
बाल अधिकार कार्यकर्ता सह मनोवैज्ञानिक, बोकारो (झारखंड)।

> "बच्चे प्रेम के भूखे होते हैं। जो बात उन्हें फटकार कर नहीं मनाई जा सकती, वही प्यार के दो शब्द बोलने से वे मान सकते हैं। यही इंसानियत भी है। इन्हें प्यार से समझाने की जरूरत है, न कि शारीरिक या मानसिक रूप से दंड दिया जाना।

अनुशासन के नाम पर कॉर्पोरल पनिशमेंट (शारीरिक दंड) कानूनन जुर्म है। इसके नाम पर बच्चों के साथ किसी भी तरह की क्रूरता नहीं की जा सकती। किशोर न्याय अधिनियम 2015 की धारा 23 में इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है। हाल के दिनों में सोशल मीडिया पर बच्चों के साथ स्कूलों या घरों में या होस्टलों में क्रूरता की खबरें और वीडियो वायरल होते ही रहते हैं। जबकि, यह सरासर गलत है। बच्चे प्रेम के भूखे होते हैं। जो बात उन्हें फटकार कर नहीं मनाई जा सकती, वही प्यार के दो शब्द बोलने से वे मान सकते हैं। यही इंसानियत भी है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 की धारा यह कहती है कि बच्चों के साथ किसी भी तरह के शारीरिक दंड, मानसिक प्रताड़ता व भेदभाव को प्रतिबंधित किया गया है। इसके साथ किशोर न्याय अधिनियम 2015 की धारा 82 में भी यह परिभाषित है और ऐसे कृत्य अंजाम देने वाले व्यक्ति के प्रति कारावास और आर्थिक दंड का प्रावधान है।

शिक्षण संस्थाओं व घरों में बच्चों के बीच अनुशासन बनाये रखने के नाम पर शारीरिक व मानसिक रूप से दंड देने का काम संस्थान के हितधारकों व घरों में माता-पिता व अभिभावक करते हैं। बच्चे गलती कर सकते हैं। इसके लिए इन्हें प्यार से समझाने की जरूरत है, न कि शारीरिक या मानसिक रूप से दंड दिया जाना। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 में भी बच्चों के अधिकार की रक्षा एवं अनुच्छेद 21 'ए' मे 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिये शिक्षा के अधिकार व गरिमा के साथ जीवन के अधिकार को शामिल किया गया है। किसी बच्चे को शारीरिक दंड देना बच्चों की स्वतंत्रता और गरिमा को ठेस पहुंचाने जैसा है। स्कूल प्रबंधन की जिम्मेदारी है कि स्कूल परिसर के भीतर बच्चों की सुरक्षा व्यवस्था के लिये जरूरी कदम उठाए जाएं। नियमों का उल्लंघन करने पर कारावास व जुमार्ने का प्रावधान है। बच्चों को अनुशासन के नाम पर मारपीट या डांटने की बजाय प्यार से समझाने की जरूरत है। हमारे समाज में अनुशासन की परिसीमा डांटने व मारपीट करने तक सीमित कर दी गई है। मारपीट करने या डांटने की बजाए बच्चे को इस तरह शिक्षा दी जाए कि वे अनुशासन के महत्व को समझें। स्वयं ही खुद को अनुशासित रखें।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

छठि गाम केर याद अबैत अछि

मैथिली कविता

दीआबाती के दोसरे दिन सँ,
शुरू होइक छठिक तैयारी।
धिआ-पूता सब बेसी हर्षित,
बिहुंसि रहल भरि घर घरारी।।

एक्कै पोखरि मे छठि होइत अछि,
पूरा गामक एक्कै साथ।
छीलि छालि जा घाट बनाबी,
गोबरि, माटि सं नीपी घाट।।

चाउर, गहूम के पानि सँ धो क',
आंगनि मध्य सुखाओल जाइक।
रोमय लेल, कौआ, कुक्कुर के,
धिआ पूता के कहल जाइक।।

दीआ, सरवा, ढाकन, कूरा,
माटिक बासन द' जाय कुम्हार।
बांसक समान ढाकी, कोनियां,
आ' सूप डोम क' दैक तैयार।।

आओर सामग्री सुथनी, आदी,
हरदि, मुरै, कुसियार सपात।
पान, सुपारी, दूध, दही, मधु,
सेनूर, बद्धी आ' आर्तक पात।।

फूल, नारिकेर, नेबो, केरा, फल,
धूप, मधुर नाना प्रकार।
धोल सुखायल गहुम, चाउर के,
चिक्कस के ठकुआ, कसार।।

किछु समान गामक बजार सं,
किछु दूरक बजार सं लाबय।
जतय-जतय जे भेटै जकरा,
छानि मारि से ल' क' आबय।।

तिथि पंचमी खरना पूजा,
ग्रहण करी सभ मिलि परसाद।
दोसरे दिन अर्घ्यक तैयारी,
शुरू होइत छल होइतहिं प्रात।।

बेरु पहर होइतहिं सब निकलय,
सपरिवार मित्रगण साथ।
पूजा सामग्री भरि ढाकी,
चलय घाट दिशि धयने माथ।।

सब परिवार के पबनैतिन सभ,
होइक पोखरि मे पानि में ठाढ।
प्रज्वलित दीप प्रतिबिम्ब पानि मे,
दृश्य मनोरम अपरम्पार।।

संझुका अर्घ्यदान के बाद,
घरक लेल सब होइ प्रस्थान।
भोरे फेर अन्हरओखे आओत,
एहि बात के रखन ध्यान।।

ओएह मनोरम दृश्य उपस्थित,
पुनः भोर मे छठिक घाट।
उगैत सुरुज के अर्घ्यदान संग,
होइक समापन पूजा-पाठ।।

कय प्रणाम सभ छठि माइ के,
डेग बढाबय घ'रक दीस।
बाटहिं मे रुकि ब्रह्मस्थान,
ओतय चढाबय दूध आ' पीठ।।

घर पहुंचि परसाद माइ के,
सभ केओ मिलि क'ग्रहण करी।
इएह प्रार्थना ह छठी माई,
जन-जन के कल्याण करी।।

जीवन-यापन के लेल शहर मे,
मोन मुदा निज गाम बसैत अछि।
दूर शहर मे बैसल आई,
छठि गाम केर याद अबैत अछि।।

सुधीर कुमार झा, कोलकाता।

भक्तिरस में सराबोर इस्पातनगरी

दिवाली, कालीपूजा के बाद महापर्व छठ की धूम

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : इस बार का अक्टूबर माह साल के प्रमुख त्योहारों को अकेले अपने में समेट ले गया। दुर्गापूजा के बाद दिवाली, कालीपूजा से लेकर आस्था का महापर्व छठ भी इसी महीने रहा। पिछले एक हफ्ते से इस्पातनगरी बोकारो और उपशहर चास में चारों तरफ का वातावरण भक्तिरस में सराबोर है। हर तरफ भक्तिभाव, भजन-कीर्तन और श्रद्धा-आस्था का माहौल छाया है। इसी कड़ी में सूर्योपासना के चारदिवसीय महापर्व की सभी विधियां पूरे नेम-निष्ठा के साथ की गई। महाव्रत के दूसरे दिन शनिवार को छठव्रतियों ने पूरी श्रद्धा व आस्था के साथ खरना पूजा संपन्न की। खरना प्रसाद बनाने से पहले घाट पर कई श्रद्धालुओं ने पूजा की। पूरे दिन निर्जला व्रत के बाद शाम को स्नान कर, नए कपड़े पहनकर व्रतियों ने परंपरानुसार पूर्ण नियम-निष्ठा व पवित्रता के साथ प्रसाद बनाया तथा पूजन कर भगवान को भोग लगाया। खरना पूजा में मिट्टी के चूल्हे पर बना प्रसाद ज्यादा महत्व रखता है। शुद्ध दूध में खीर बनाया जाता है। इसके साथ रोटी बनाई जाती है। व्रती खीर और रोटी भगवान को भोग लगाती हैं। इसके बाद हवन करती हैं। व्रतियों के साथ-साथ उनके परिवार के सभी सदस्यों, रिश्तेदारों व इष्टमित्रों ने भी हवन में भाग लिया और सुख-समृद्धि व क्लेश-निदान की कामना की।

पूजा के बाद वही रोटी व खीर प्रसाद के रूप में व्रतियों ने पूरे परिवार के साथ ग्रहण किया। साथ ही, अपने इष्ट-मित्र, सगे-संबंधी, रिश्तेदारों को अपने घरों पर आमंत्रित कर प्रसाद खिलाया। चास, बोकारो में चारों तरफ इस पूजन तथा प्रसाद-ग्रहण का सिलसिला देर शाम तक जोरों पर चलता रहा। खरना पूजा के साथ ही निर्जला व्रत शुरू हो गया। खरना के पूर्व शुक्रवार को नहाय-खाय के साथ सूर्य उपासना का महापर्व छठ पर्व शुरू हो गया। सूर्य उपासना में शामिल व्रतियों ने कद्दू भात का प्रसाद ग्रहण किया। उनका साथ परिजनों ने भी दिया।

उत्साह में महंगाई ने डाला खलल, पर आस्था भारी

बोकारो थर्मल : छठ को लेकर एक ओर जहां लोगों में उमंग एवं उत्साह दिखा, वहीं दूसरी ओर सामानों एवं फलों के बढ़े हुई दामों के कारण लोग थोड़े मायूस भी नजर आये। बाजारों में सामानों एवं फलों के दामों में बढ़ोतरी देखने को मिली। सेव 100 से 120 रुपया प्रति किलो, संतरा 60-80 रुपया, केला प्रति दर्जन 50-60 रुपया, नाशपती 100-120 रुपया, 50 रुपये किलो बिकने वाला शरीफा 200 रुपया किलो, 30-40 रुपया किलो बिकने वाला पानीफल 80 रुपया, 20 रुपया किलो का शकरकंद 50 रुपया, अमरुद 100 रुपया किलो, 30 रुपया किलो का लाल मूली 60 रुपया, अदरख, हल्दी, गाजर 200 रुपया किलो की दर से बाजार में बिक रहा था। फलों की कीमत कुछ ज्यादा होने के बाद भी छठ व्रती इसकी खरीदारी कर रहे हैं, क्योंकि यह आस्था से जुड़ा हुआ महापर्व है। चार दिवसीय सूयोर्पासना के महान पर्व छठ में खरना को लेकर एक ओर जहां छठव्रती स्थानीय कोनार नदी में स्नान कर अपने-अपने घरों में प्रसाद बनाती दिखाई पड़ीं, वहीं दूसरी ओर फलों एवं पूजन सामग्री की खरीदारी को ले श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी।

भाई-दूज व भरदुतिया की भी रही धूम

रक्षाबंधन की तरह ही भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक पर्व है भाई दूज। बोकारो में भाई-बहनों ने इस पर्व को उत्साहपूर्वक मनाया। एक तरफ जहां भाई दूज की धूम रही और बहनों ने परम्परानुसार भाइयों की लंबी आयु की कामना के साथ विधिपूर्वक पूजा संपन्न की, वहीं दूसरी तरफ मिथिलांचलवासी भाई-बहनों के घर इस पर्व को भरदुतिया के रूप में मनाया गया। मिथिलांचल में भाई दूज को भातृद्वितीया व आम बोलचाल की भाषा में भरदुतिया कहा जाता है। इस अवसर पर बहनों ने विधि-विधान के साथ अपने भाई की पूजा की। विशेष प्रकार की अल्पना बनाकर उस पर आसन के रूप में पीढ़ा रखकर भाई को बिठाया। फिर भाई के दोनों हाथ (आंजुर) में सिन्दूर, पिठार (चावल का घोल) लगाया और कुम्हरा का फूल, पान का पत्ता, सुपारी, पैसा, अंकुरी जल आदि से पूजा संपन्न की। इसे नोत लेना कहते हैं। इस क्रम में बहन मंत्र भी पढ़ती हैं- 'गंगा नोतैय जमुना कें, हम नोतै छी भाई कें', जतेटा यमुनाक धार, ततेटा हमर भैयाक आयु'। भाई बहन को उपहार भी देते हैं। बहनें भाई को मिठान्न, स्वादिष्ट पकवान खिलाती हैं। इस पर्व को ले मिथिलांचल के भाई-बहनों में खासा उत्साह रहता है।

वसुंधरा परिवार ने बोकारो में की ऐतिहासिक शुरुआत

इस्पात उत्पादन व शिक्षा के अलावा आध्यात्मिक धरोहरों से परिपूर्ण बोकारो के भक्तिमय अनुष्ठानों में वसुंधरा परिवार ने एक नया अध्याय जोड़ दिया। अवसर था मां काली पूजनोत्सव का। नगर के सेक्टर- 3बी में शर्मा मोड़ के समीप स्थित वसुंधरा गली में इस वर्ष से मां काली पूजनोत्सव की भव्य शुरुआत बोकारो स्टील सिटी की किसी स्ट्रीट विशेष में आपसी सहयोग से संभवतः पहली बार इस तरह का आयोजन रही। लोगों ने आपसी सहयोग से बोकारो के आध्यात्मिक अनुष्ठानों में एक नया आयाम जोड़ दिया। दीपावली की जगमगाहट के बीच काली पूजा को लेकर वसुंधरा गली की साज-सज्जा टिमटिमाते बिजली बल्बों की चकमक अपने आप में एक अद्भुत छटा बिखेर रही थी। वृहद पंडाल के बीच मां दक्षिण काली की भव्य प्रतिमा स्थापित कर पूरी श्रद्धा के साथ उनकी पूजा-अर्चना की गई। पूरा वातावरण बांग्ला पद्धति से शंख-ध्वनि और उलूक ध्वनि के बीच मां काली की जय-जयकार से गुंजायमान बना रहा। पुरोहित के रूप में पंडित धनंजय चक्रवर्ती ने पूजन संपन्न कराया, जबकि मोहल्लेवासियों की ओर से यजमान के रूप में संजय चक्रवर्ती पूजा पर बैठे। तीसरे दिन टू-टैंक गार्डन में प्रतिमा विसर्जन के साथ अनुष्ठान संपन्न हुआ। भक्तों ने अगले बरस मैया को जल्दी आने का न्योता देकर उन्हें भावपूर्ण विदाई दी। इस क्रम में बच्चों के लिए कई सांस्कृतिक व मनोरंजक स्पद्धाएं भी आयोजित की गईं, जिनके विजेताओं को पुरस्कृत कर प्रोत्साहित किया गया। आयोजन की सफलता में बालेश्वर सिंह, अर्जुन प्रसाद सिंह, धनंजय चक्रवर्ती, विजय कुमार झा, विप्लव दास, विजय कुमार सिंह, एके सिंह, गोपाल महतो, दीपक महतो, गोरेलाल गोराई, सतीश सिंह, श्याम कुमार, सुनील कुमार, मोहन कुमार, विनोद कुमार, पुष्पांजलि, सोनी कुमारी, एसपी मिश्रा, मीना कुमारी, अनामिका, रश्मि झा, तुलसी, विकास आदि की अहम भूमिका रही।

सेक्टर-4 में फ्रेंड्स क्लब के काली पूजनोत्सव की स्वर्ण जयंती

इस्पातनगरी बोकारो में मां काली पूजनोत्सव की धूम मची रही। इसी कड़ी में सेक्टर-4 स्थित मजदूर मैदान में फ्रेंड्स क्लब द्वारा मां की विराट प्रतिमा स्थापित कर मैया की पूजा शुरू की गई। यहां छहदिवसीय पूजनोत्सव में लगाए गए मेले में मीना बाजार और रंग-बिरंगे झूले आकर्षण का केंद्र बने हैं। बोकारो विधायक बिरंची नारायण ने यहां पूजा का शुभारंभ किया। यहां पंडाल को बीकानेर के जगदंबा मंदिर का स्वरूप दिया गया है। महाकाली पूजा के संस्थापक सदस्य कृष्ण कुमार मुन्ना ने बताया कि फ्रेंड्स क्लब द्वारा पिछले 50 वर्षों से महाकाली पुजा की जाती है। 1972 में जहां अभी हर्षवर्धन प्लाजा अवस्थित है, वहीं पूजा प्रारंभ कराई गई थी। मार्केट कॉम्प्लेक्स बनने के पश्चात इस पूजा को मजदूर मैदान में किया जाने लगा। इस बार माता महाकाली की लगभग 12 फीट ऊंची भव्य प्रतिमा का निर्माण पुरूलिया के मंटू पाल व उत्तम बाउरी ने किया। पंडाल को राजस्थान बीकानेर के जगदंबा मंदिर का स्वरूप दिया गया। यहां लगाए गए मेले में बच्चों ने खूब आनंद लिया। मीना बाजार में भी लोगों की भीड़ लगी रही। दो साल के बाद कालीपूजा में आस्था के साथ उत्साह का माहौल दिखा। आयोजन की सफलता में कृष्ण कु मार मुन्ना सहित पूजा कमेटी के अध्यक्ष प्रभात कुमार, उपाध्यक्ष एके दास, आरजी पांडे, अखिलेश सिंह, प्रमोद मिश्रा, महासचिव अरविंद राय, सचिव त्रिलोचन मिश्रा, बृजेश कुमार, संजीव कुमार, राजेश कुमार राय, कोषाध्यक्ष उपेन्द्र नारायण सिंह, संरक्षक प्रेमनाथ पांडे, अनूप आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

श्यामा माई मंदिर में बही भक्तिरस की बयार

नगर के सेक्टर- 2 स्थित मैथिली कला मंच काली पूजा ट्रस्ट द्वारा संचालित श्यामा काली मंदिर में काली पूजा के अवसर पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। तीन दिनों तक यहां भक्तिरस की सरिता प्रवाहित होती रही। रातभर विधिपूर्वक पूजन कार्यक्रम चलता रहा, वहीं दूसरी ओर मंच पर नगर के ख्याति-प्राप्त कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से मां काली को अपनी भावांजलि दी। सांस्कृतिक कार्यक्रम में पं. बच्चन जी महाराज, अरुण पाठक, दीप्ति झा, उमेश झा, विश्वनाथ गोस्वामी, हरेकनाथ गोस्वामी, धीरज तिवारी, संजीव मजूमदार, मिलन गोस्वामी, शैलेश, शिवचरण गोस्वामी, गुनगुन मजूमदार, हर्षित झा आदि ने अपनी प्रस्तुतियों से श्रोताओं को आनंदित किया। दूसरे दिन बाहर से आमंत्रित कलाकारों में रचना झा व अन्य ने समां बांधा। वहीं, मधुबनी से पहुंचे बिलट राम और उनके सहयोगी कलाकारों द्वारा शहनाई वादन की रसन-चौकी भी आकर्षक बनी रही। आयोजन की सफलता में ट्रस्ट के अध्यक्ष केसी झा, महामंत्री सुनील मोहन ठाकुर, पूजा संयोजक मिहिर झा 'राजू' सहित विजय मिश्र 'अंजू', रामबाबू चौधरी, जयराम झा, लक्ष्मण झा, इंद्र कुमार झा, अविनाश झा, प्रदीप झा, हरीश चंद्र झा, पं. गोविंद झा, पं. गौरी शंकर झा, पं. राधेश्याम झा बाऊ आदि की अहम भूमिका रही।

श्रद्धा व उमंग के साथ मनाई गई दीपावली

धन की अधिष्ठात्री देवी मां महालक्ष्मी की पूजा-अर्चना तथा दीयों व रोशनी का त्यौहार दीपावली बोकारो, उपशहर चास सहित आसपास के पूरे इलाके में धूमधाम के साथ मनायी गयी। हर बार की भांति इस बार भी दीपावली पर यहां भक्ति, श्रद्धा व आस्था के साथ-साथ उमंग, जोश व उल्लास का अनुपम संगम देखने को मिला। इस्पातनगरी में चारों तरफ का वातावरण आतिशबाजियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। बच्चों से लेकर बड़े बुजुर्गों ने भी दीपावली पर पटाखे फोड़ने के मजे लिये। वहीं, पूरा शहर दीयों तथा बिजली बल्बों की जगमगाहट से दमकती दुल्हन की तरह प्रतीत होता रहा। लगभग 15 दिन पहले से की जा रही है साफ-सफाई व रंग-रोगन के बाद लोगों ने पूरे उत्साह के साथ अपने आशियाने सजाये, रंगोलियां बनायीं और भक्तिभाव के साथ पूजन कर मां लक्ष्मी के अपने घर में स्थायी वास की कामना की।

बीएसएल में विशेष स्वच्छता एवं हाउसकीपिंग अभियान

17050 से अधिक फाइलों का निबटारा

संवाददाता

बोकारो : इस्पात मंत्रालय के निर्देशानुसार सेल द्वारा अपने विभिन्न संयंत्रों व इकाइयों में विगत 2 अक्टूबर से चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत बोकारो स्टील प्लांट, झारखंड ग्रुप ऑफ माइंस तथा कोलियरीज डिविजन में रिकार्ड मैनेजमेंट, स्वच्छता अभियान, स्क्रैप का डिस्पोजल एवं व्यवस्थीकरण तथा नियमों का सरलीकरण इत्यादि जैसे कार्य बड़े पैमाने पर किये जा रहे है। इस सिलसिले में संयंत्र के सिंटर प्लांट, एसएमएस-2 एवं सीसीएस, सीआरएम-1,2, सीआरएम-3, आरएमपी, आई एवं ए, टीबीएस, सामग्री प्रबंधन, बोकारो जनरल अस्पताल, कार्मिक, आरईडी इत्यादि विभागों सहित माइंस एवं कोलियरीज डिवीजन में स्वच्छता एवं हाउसकीपिंग अभियान लगातार चलाया जा रहा है।

स्वच्छता एवं हाउसकीपिंग अभियान के अंतर्गत बीएसएल समूह द्वारा 10000 फाइलों के डिस्पोजल का लक्ष्य रखा गया था। इस लक्ष्य से आगे बढ़ते हुए टीम बीएसएल ने अब तक 16500 से अधिक फिजिकल फाइलों तथा 550 से अधिक ई-फाइलों का डिस्पोजल कर लिया है।

इसी प्रकार बीएसएल, माइंस एवं कोलियरीज डिवीजन में अब तक 107 विभिन्न स्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाया गया है, जिसके तहत कार्य-स्थल की सफाई करते हुए उपयोगी एवं अनुपयोगी सामानों को पृथक किया गया तथा उपयोगी सामानों की सफाई कर-के उनको सही जगह पर व्यवस्थित ढंग से टैग कर रखा गया है। इसी अभियान के तहत स्क्रैप डिस्पोजल से अब तक लगभग 1534 वर्ग मीटर जगह को खाली किया गया है, जिसका उपयोग अन्य कार्यों के लिए किया जाएगा। इसी कड़ी में कई नियमों के सरलीकरण की प्रक्रिया भी जारी है।

लुगुबुरू घंटाबाड़ी धोरोमगाढ़ में धार्मिक महासम्मेलन 7-8 नवंबर को

बोकारो : संतालियों के वार्षिक महा-आयोजन लुगुबुरू घंटाबाड़ी धर्म महासम्मेलन की तैयारी जोर-शोर से चल रही है। दो साल के कोरोनाकाल के बाद इस बार वृहत स्तर पर इसके आयोजन की तैयारी प्रशासन ने तेज कर दी है। इस बार यह महासम्मेलन 7 एवं 8 नवंबर को लुगुबुरू घंटाबाड़ी धोरोमगाढ़ में होगा। इसे लेकर डीसी कुलदीप चौधरी ने अपने कार्यालय कक्ष में अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में पुलिस अधीक्षक चंदन झा, अपर समाहर्ता सादात अनवर समेत जिला स्तरीय पदाधिकारीगण एवं पूजा समिति के सदस्य उपस्थित थे। बैठक में उपायुक्त ने पूजा समिति के अध्यक्ष के साथ समन्वय स्थापित कर कार्यक्रम को सफल बनाने को लेकर आवश्यक दिशा- निर्देश दिया। डीसी ने कहा कि कहा कि समारोह में मुख्यमंत्री झारखंड का संभावित कार्यक्रम प्रस्तावित है। ऐसे में जन कल्याणकारी योजनाओं के लाभुकों के बीच परिसंपत्ति का भी वितरण होगा। सभी पदाधिकारी अपने- अपने विभाग के लाभुकों को चिन्हित कर आवश्यक तैयारी करें। चाक चौबंद सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश देते हुए उन्होंने सीसीटीवी कैमरे लगाने सहित पर्याप्त सुरक्षा बल की तैनाती किए जाने को कहा।

अभियान चंद्रपुरा व बोकारो थर्मल में डीवीसीकर्मियों व स्कूली बच्चों ने लगाई दौड़

'फिट इंडिया' मुहिम को ले आगे आए लोग

संवाददाता

चंद्रपुरा/बोकारो थर्मल : डीवीसी चंद्रपुरा प्रबंधन द्वारा आयोजित फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0 के तहत डीवीसीकर्मियों, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों और एनसीसी के कैडेटों आदि ने दौड़ लगाई। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान अजय कुमार दत्ता, मुख्य अभियंता सुनील कुमार पांडेय, देवव्रत दास और उपमहाप्रबंधक प्रशासन टीटी दास ने फीता काटकर और झंडा दिखाकर शुभारंभ किया। यहां के प्लांट के मुख्य गेट के समक्ष सभी कर्मी उपस्थित हुए और कतारबद्ध होकर कार्यक्रम में भाग लिया। सभी कर्मी प्लांट के मुख्य गेट के पास से दौड़ लगाते हुए यहां के शहीद तिलका मांझी मेमोरियल अस्पताल तक पहुंचे और पुनः प्लांट गेट के पास दौड़ लगाते हुए वापस आए। इस अवसर पर मुख्य अभियंता सुनील कुमार पांडेय, पीके मिश्रा, देवव्रत दास, उपमहाप्रबंधक प्रशासन टीटी दास, उपमुख्य अभियंता, केके सिंह, संजय कुमार, सुजय भट्टाचार्य, मानवेंद्र प्रियदर्शी, अपर निदेशक दिलीप कुमार, पीके झा, मनोज कुमार, अनिल कुमार सिंह, रविंद्र कुमार, अक्षय कुमार, संजीव कुमार आदि उपस्थित थे। इधर, बोकारो थर्मल स्थित केंद्रीय विद्यालय में फिट इंडिया, फ्रीडम रन का आयोजन किया गया। स्कूल के प्राचार्य डॉ. डी. कुमार ने फ्रीडम रन को रवाना किया। इसके तहत स्कूली बच्चों ने फिटनेस का डोज, आधा घंटा रोज के नारे लगाए विद्यालय प्रांगण से निकलकर डीवीसी के निदेशक भवन, सीएमडी कॉलोनी, कार्मेल स्कूल होते हुए स्कूल परिसर पहुंचे। कार्यक्रम में सभी बच्चों ने रास्ते में लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने का भी संदेश दिया। केंद्रीय विद्यालय संगठन रांची संभाग के डीसी डीपी पटेल के निर्देशानुसार प्रत्येक विद्यालय में बच्चों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मौके पर सभी शिक्षकों, कर्मचारियों एवं उपस्थित छात्रों ने अपने आप को स्वस्थ रखने के लिए प्रतिदिन कम से कम आधा घंटा फिजिकल एक्सरसाइज करने, अपने आसपास के वातावरण को साफ रखने तथा दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने की प्रतिज्ञा ली। इस दौड़ में प्रभारी राकेश पाठक, शशि रंजन, आर. सिंह, खेल शिक्षिका मालती कुमारी, एलएस लुगुन, प्रणब कुमार, साजिद हुसैन, डीके दास एवं सभी शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।

हफ्ते की हलचल

प्रदर्शनी के जरिए बताई राष्ट्रीय एकीकरण में लौहपुरुष की भूमिका

बोकारो : राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर सरदार वल्लभभाई पटेल के महत्वपूर्ण योगदान को याद करते हुए आद्रा मंडल के बोकारो स्टील सिटी स्टेशन पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। प्रदर्शनी के दौरान बोकारो स्टील सिटी स्टेशन पर क्षेत्रीय प्रबंधक आयुष कुमार सहित स्टेशन व रेलवे के कई अधिकारी व कर्मी मौजूद रहे। प्रमुख वरिष्ठ नागरिक एवं स्वतंत्रता सेनानी भी मुख्य रूप से उपस्थित थे। प्रदर्शनी में सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएं एवं भारत के एकीकरण में उनकी भूमिका तथा स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान से जुड़ी विभिन्न तस्वीरें डिजिटल स्क्रीन पर दिखाई गईं एवं आर्ट गैलरी भी सजाई गई। इसके माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण में लौहपुरुष की भूमिका से लोगों को अवगत कराया गया। इसके अलावा भारत स्काउट्स एंड गाइड्स एवं दक्षिण पूर्व रेलवे के कर्मचारीयोंएवं उनके परिवारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। देशभक्ति गीत भी गाए गए। क्षेत्रीय प्रबंधक ने कहा कि इस प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य सरदार वल्लभभाई पटेल के महत्वपूर्ण योगदान को याद करना है, ताकि भारत के नागरिक यह सीख सकें कि कैसे लगातार ताकतवर बनना है और एकजुट रहना है। पुरुलिया स्टेशन पर भी आद्रा मंडल रेलवे की ओर से ऐसा ही आयोजन किया गया।

रक्तदान से बढ़कर कोई दान नहीं : सन्निग्रही

बोकारो थर्मल : यहां विहंगम योग संस्थान में संस्थान की स्थानीय शाखा एवं रेडक्रॉस सोसायटी रांची के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित रक्तदान शिविर में 46 लोगों ने रक्तदान किया। शिविर का उद्घाटन डीवीसी बोकारो थर्मल के एचओपी सुशांत सन्निग्रही एवं सीइ एसएन प्रसाद ने किया। समारोह को संबोधित करते हुए एचओपी ने कहा कि रक्तदान से बड़ा दान जीवन में कुछ भी नहीं है और प्रत्येक स्वस्थ मनुष्य को रक्तदान करना चाहिए। रक्तदान कर जरूरतमंदों के जीवन को बचाया जा सकता है। रेडक्रॉस सोसायटी के डॉ. यू. मोहंती ने कहा कि प्रत्येक मनुष्य एक वर्ष में चार बार रक्तदान कर सकता है। संचालन संस्थान के आनंद केशरी ने किया। शिविर में सोसायटी के प्रवीण कुमार, मनोज कुमार, शाहिद अंसारी, राजकुमार, चुरामन, जितेंद्र आदि ने रक्त संग्रह किया। मौके पर विहंगम योग संस्थान के संरक्षक केपी सिंह, नीलकंठ रविदास, रमेश ठाकुर, शिवचंद्र यादव, जानकी यादव, बिनोद कुमार, प्रभात कुमार सिंह, विंदा राम, पौरुष सिंह, अशोक राम, परमेश्वर नायक, सुरेश राम, गुरुचरण विश्वकर्मा, मधु खत्री, विभाष सिंह,ए जाज अंसारी, शिक्षक एसके झा आदि की सराहनीय भूमिका रही।

चित्रगुप्त पूजा का आयोजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए

बोकारो थर्मल : बोकारो थर्मल के त्रयोदश मंदिर स्थित चित्रगुप्त मंदिर में स्थानीय चित्रगुप्त महापरिवार की ओर से चित्रगुप्त पूजा का आयोजन काफी धूमधाम से किया गया। पूजा में बोकारो थर्मल, सीसीएल गोविंदपुर, कारो स्पेशल फेज-2 के सभी कायस्थ परिवार के सदस्य शामिल हुए.पूजा-अर्चना एवं हवन के बाद प्रसाद का वितरण किया गया। पूजा के बाद स्थानीय आफिसर्स क्लब में महिलाओं एवं बच्चों के लिए कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों में म्यूजिकल चेयर, चित्रांकन एवं हॉजी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा प्रतियोगिता के सफल प्रतियोगियों में पुरस्कार वितरण भी किया गया। मौके पर डीवीसी डिप्टी चीफ इंजीनियर सिविल आरके सिन्हा, डीजीएम नीरज सिन्हा, प्रबंधक (संरक्षा) आरआर सिन्हा सहित चित्रगुप्त महापरिवार के अध्यक्ष आनंद प्रकाश मेहता, उपाध्यक्ष विजय वर्मा, रत्नेश सिन्हा, अभय सिन्हा, पीपी श्रीवास्तव, सचिव मुकुल वर्मा, कोषाध्यक्ष सुनील कुमार, संगठन सचिव देवनील कर्ण, संगठन मंत्री प्रभात सिन्हा सहित अंकित प्रकाश, रजत सिन्हा, अनिल कर्ण, रूपेश श्रीवास्तव, शरद निगम, विनय सिन्हा, राजीव श्रीवास्तव, अमलेंदु कुमार दास, सुनील चौधरी आदि मौजूद रहे।

तीन रुपए के विवाद में कर दी महिला की हत्या, गिरफ्तार

चास : चास के हाजी नगर में तीन रुपए के विवाद में नजमा खातून (55) की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने 24 घंटे में हत्या में शामिल दो आरोपियों- मो. जाकिर शेख और मो. शमीम अंसारी उर्फ गुड्डू को पुलिस की टीम ने दबोच लिया। चास एसडीपीओ पुरुषोत्तम कुमार सिंह ने बताया कि महिला की विवाद दुकानदार के साथ हुई थी, जिसमें वे दोनों बदमाश सामने आ गए। सुबह महिला ने जाकिर को समझाने का प्रयास किया था, जिसके बाद दोनों ने मिलकर महिला को चाकू से हमला करते हुए जान से मार डाला। वहीं, जब महिला को बचाने के लिए उसके दोनों बेटे सामने आए, तो दोनों ने उन दोनों पर भी चाकू से हमला कर दिया और वहां से फरार हो गए। गिरफ्तार दोनों आरोपी इससे पूर्व भी आपराधिक घटनाओं में शामिल रहे हैं। वे नशा करने के लिए कई तरह की घटनाओं को अंजाम देते रहे हैं। घटना के वक्त भी दोनों नशे में थे।

सीएमपीएफ दफ्तर अब दरभंगा हाउस में

कोयला सचिव डॉ. अनिल ने किया उद्घाटन, कहा- पेंशन भुगतान में होगी सहूलियत

विशेष संवाददाता

रांची : सीसीएल मुख्यालय, दरभंगा हाउस, रांची के परिसर में सीएमपीएफ कार्यालय क्षेत्र 1 एवं 2 का उद्घाटन सचिव (कोयला), भारत सरकार एवं चेयरमैन बोर्ड ऑफ ट्रस्टी, डॉ. अनिल कुमार जैन ने वर्चुअल रूप से किया। कार्यक्रम में कोल इंडिया, निदेशक (कार्मिक) एवं सदस्य, बोर्ड ऑफ ट्रस्टी, विनय रंजन, श्रीमती संतोष, कमिश्नर (सीएमपीएफ) वर्चुअल माध्यम से कार्यक्रम में जुड़े रहे। इस अवसर पर सीएमडी, सीसीएल, पी.एम. प्रसाद, कमिशनर (सीएमपीएफ), वी.के. मिश्रा, निदेशक तकनीकी (संचालन), सीसीएल राम बाबू प्रसाद, निदेशक (वित्त), सीसीएल, पवन कुमार मिश्रा, निदेशक (कार्मिक), सीसीएल, हर्ष नाथ मिश्र, निदेशक तकनीकी (योजना/परियोजना), सीसीएल, बी. साईराम, सीवीओ, सीसीएल, एस.के. सिन्हा, जेबीसीसीआई के माननीय सदस्य एवं सदस्य, बोर्ड ऑफ ट्रस्टी, श्री रमेन्द्र कुमार सहित श्रमिक संघ के प्रतिनिधिगण एवं विभिन्न विभागों के महाप्रबंधक, विभागाध्यक्ष एवं कर्मी उपस्थित थे।

सचिव (कोयला) डॉ. अनिल कुमार जैन ने संबोधित करते हुये कहा कि सीएमपीएफ कार्यालय का सीसीएल, मुख्यालय, रांची में स्थानांतरण से विशेषकर सीसीएल कर्मियों को सुविधा होगी। हम सभी का उद्देश्य सामाजिक सुरक्षा जिसके अंतर्गत कर्मियों का सीएमपीएफ/पेंशन का भुगतान समय पर हो, किसी भी समस्या का निवारण त्वरित रूप से किया जाय। उन्होंने कहा कि आईटी के क्षेत्र में नये-नये खोज हो रहे हैं, और कार्य को सुलभ बनाने के लिए नये तकनीको का उपयोग किया जा रहा है। उन्होंने विशेषकर सीसीएल प्रबंधन को धन्यवाद देते हुये कहा कि उनके कार्यकाल में ही सीएमपीएफ कार्यालय का स्थानांतरण सीसीएल दरभंगा हाउस परिसर में हुआ।

निदेशक (कार्मिक), कोल इंडिया एवं सदस्य, बोर्ड ऑफ ट्रस्टी, विनय रंजन ने सीएमपीएफ के नये भवन के उद्घाटन पर सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुये कहा कि सेवानिवृत्त कर्मियों के ग्रिवान्सेस को तत्काल दूर करने का हर सभंव प्रयास किया जायेगा। इसके पूर्व, सीएमडी पी.एम. प्रसाद ने सभी का स्वागत करते हुये कोल इंडिया एवं कोयला मंत्रालय, भारत सरकार एवं सीएमपीएफ ट्रस्टी सदस्यों का आभार व्यक्त किया और कहा कि आप सभी के सम्मिलित प्रयास से ही सीएमपीएफ कार्यालय का स्थानांतरण दरभंगा हाउस, सीसीएल में हुआ है। इस भवन को अत्याधुनिक बनाया गया है, उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुये कहा कि सेवानिवृत कर्मियों को निश्चय ही लाभ मिलेगा।

कमिशनर (सीएमपीएफ) वी.के. मिश्रा ने कोयला मंत्रालय, भारत सरकार, सीएमपीएफ के सभी ट्रस्टी सदस्यों एवं सीसीएल प्रबंधन का आभार जताते हुए कहा कि सीएमपीएफ का दैनिक कार्यालयीन काम जल्द ही यहां शुरू किया जाएगा। सीसीएल प्रबंधन का सहयोग सराहनीय रहा है।

अवसर विशेष पर माननीय जेबीसीसीआई के सदस्य एवं सदस्य, बोर्ड ऑफ ट्रस्टी, रमेन्द्र कुमार, संतोष, कमिश्नर (सीएमपीएफ) ने भी संबोधित किया और सभी को बधाई देते हुये कहा कि सीएमपीएफ कार्यालय के स्थानांरतण से सीएमपीएफ एवं सीसीएल में और बेहतर संबंध होंगे और कर्मियों के लिए सुविधा होगी। निदेशक (कार्मिक) हर्षनाथ मिश्र ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में कहा कि सीएमपीएफ का कार्यालय दरभंगा हाउस, परिसर में होने से विशेषकर सेवानिवृत कर्मियों को लाभ होगा और संबंधित कोई भी समस्या का निपटारा सुगमतापूर्वक होगा। उन्होंने सचिव (कोयला), भारत सरकार एवं चेयरमैन बोर्ड ऑफ ट्रस्टी, डॉ. अनिल कुमार जैन, श्रीमती संतोष, विनय रंजन, वी.के. मिश्रा, बोर्ड ऑफ ट्रस्टी, रमेन्द्र कुमार एवं अन्य अतिथियों के प्रति आभार जताया।

स्वदेशी से स्वावलंबी भारत का अभियान चला रहा मंच

झारखंड-बिहार में सम्मेलनों और बैठकों का दौर जोरों पर

संवाददाता

रांची : स्वदेशी उत्पादों के जरिए भारत के आर्थिक सशक्तीकरण और देशप्रेम का जज्बा जगाने को लेकर सतत प्रयासरत इन दिनों स्वावलंबी भारत अभियान को सशक्त बनाने में जुटा है। इसके तहत हाल ही में मंच के पदाधिकारियों पूरे झारखंड-बिहार में खास तौर से मुहिम चलाई। अखिल भारतीय सह संगठक सतीश कुमार, क्षेत्रीय संयोजक सचिन्द्र कुमार बरियार तथा क्षेत्रीय समन्वयक अमरेन्द्र सिंह

की अगुवाई में हाल ही में पूरे बिहार-झारखंड में बैठकों और सम्मेलनों का दौर चला। इनके माध्यम से स्वदेशीवाद और आत्मनिर्भर भारत को बढ़ावा देने की रणनीतियां तैयार की गईं। क्षेत्रीय संयोजक श्री बरियार के अनुसार स्वावलंबी भारत अभियान का उद्देश्य बीपीएलमुक्त भारत बनाना है, जहां शत-प्रतिशत रोजगार हो। हमारी पूंजी देश की कुल आबादी का 65% युवा हैं, जिन्हें आगे आना होगा।

उन्होंने बताया कि भारत में अभी लगभग आठ करोड़ हेक्टेयर भूमि पर खेतीबाड़ी हो रही है। और 7 करोड़ हेक्टेयर भूमि को उपजाऊ बनाना है, जो ऊसर, बंजर और जलमग्न हैं। भारतीय नस्ल के पशुधन गंगातीरी, साहिवाल, सिंधीगिरी आदि की प्रजातियों की व्यापक संभावना पर काम करना है। दैनिक और नियमित उपभोग की वस्तुओं के प्रति देशी स्वदेशी 'वोकल फॉर लोकल' की अपार संभावनाएं हैं। अभी 20 करोड़ से अधिक भारतीय गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने को मजबूर हैं। 35 करोड़ से अधिक युवा रोजगार की तलाश में इधर-उधर भटक रहे हैं। हमारी मनोवृति में विदेशी सामानों के प्रति अत्याधिक आकर्षण के परिणामस्वरूप आज के भारत के बाजार 67% चीन के उत्पाद और मल्टीनेशनल प्रोडक्ट से भरे हैं।

स्वावलंबी भारत अभियान के तहत भाव-जागरण का अभियान गांव-गांव, घर-घर टोली निर्माण के साथ चल रहा है। स्वदेशी जागरण मंच, भारतीय जनता पार्टी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, विश्व हिंदू परिषद, भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ, लघु उद्योग भारती, सहकार भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, राष्ट्रीय सेवा भारती आदि संगठनों के लोग इस दिशा में सतत काम कर रहे हैं। इस अभियान के तहत हाल के दिनों में जमशेदपुर, दुमका, खगड़िया, मुजफ्फरपुर, छपरा, औरंगाबाद, मानपुर (गया) आदि जगहों पर बैठक व सम्मेलनों का सघन दौर चला।

छठव्रतियों की सेवा में आगे आई मारवाड़ी महिला सम्मेलन

पुपरी : अपने सामाजिक कार्यों की कड़ी में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की पुपरी इकाई ने एक और सराहनीय कदम बढ़ाया। आस्था के महापर्व छठ के उपलक्ष्य में संस्था की ओर से यहां की 41 छठव्रतियों के बीच पूजा सामग्री का वितरण किया गया। संस्था की अध्यक्ष मीना केजरीवाल की अध्यक्षता में स्थानीय लाल मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में छठ व्रतियों के बीच डालियां, साड़ी, नींबू, अगरबत्ती, नारियल आदि सामान वितरित किए गए।

अध्यक्षा मीना ने कहा कि जरूरतमंदों की सेवा से बढ़कर कोई पुण्य नहीं। आस्था का महापर्व में वैसे लोगों को जिनके पास साधन का अभाव होता है, उनकी मदद करने के उद्देश्य से ही संस्था ने यह कदम उठाया है। आयोजन की सफलता में अध्यक्षा मीना के अलावा उर्मिला बुबना, प्रियंका अग्रवाल, ममता शर्मा, अनीता टिबरेवाल, संगीता सुंदरका, श्वेता टिबरेवाल, अंजू जोशी आदि की सराहनीय भूमिका रही।

दरभंगा में खाद के लिए हाहाकार, किसानों में आक्रोश

दरभंगा : जिले के किसानों में इन दिनों काफी आक्रोश है। वजह मानी जा रही है खाद की कमी। खेतीबाड़ी में खाद की कमी से होने वाली परेशानी के खिलाफ कृषकों में स्थानीय कृषि विभाग और संबंधित अधिकारियों के प्रति रोष देखा जा रहा है। इसी कड़ी में बहादुरपुर अंचल किसान सभा की ओर से खाद की किल्लत दूर करने, सभी किसानों को उचित मूल्य पर खाद देने, खाद की कालाबाजारी पर रोक लगाने की मांग को लेकर देकुली से थाना मोड़ तक शनिवार को रोषपूर्ण प्रदर्शन किया गया। बहादुरपुर देकुली पंचायत अध्यक्ष मुकेश कुमार ने इसकी अध्यक्षता की। आयोजित सभा को संबोधित करते हुए दरभंगा जिला किसान काउंसिल सचिव श्याम भारती ने कहा कि पूरे जिले में खाद के लिए हाहाकार मचा हुआ है। किसानों को उचित मूल्य पर खाद नहीं मिल रहा है। दूसरी ओर, धड़ल्ले से खाद की कालाबाजारी हो रही है। उन्होंने सभी किसानों को खाद उपलब्ध कराने एवं खाद की कालाबाजारी पर रोक लगाने की मांग की। बताया कि जल्द ही खाद की किल्लत को लेकर पूरे जिले में आंदोलन किया जाएगा। इसके लिए रणनीति बनाई जाएगी। बहादुरपुर किसान सभा सचिव राम सागर पासवान ने कृषि पदाधिकारी के दावों को खोखला और झूठा बताया। कहा कि कृषि पदाधिकारी की ओर से यह कहा जाना कि जिले के किसानों को खाद की किल्लत नहीं होगा, सरासर गलत है। सभा में सुशीला देवी, हरिशंकर राम, बहादुरपुर देकुली पंचायत सचिव सत्य नारायण पासवान, मनोहर शर्मा, अर्जुन साहनी राम, शंकर सहनी, रूबी देवी, नीलम देवी आदि ने भी अपने विचार रखे। उधर, बहादुरपुर देकुली पंचायत कमेटी का सम्मेलन देकुली स्थित किसान सभा कार्यालय प्रांगण में मुकेश कुमार सुशीला देवी की अध्यक्षता में हुआ।

ब्रह्मांड के संचालक आदिदेव सूर्य

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली

ब्रहेश नाच्चुतेशाय सूर्याय आदित्य वर्चसे
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः

(हे सूर्यदेव! आप ब्रह्मा, विष्णु और महेश के ईश हैं। सौर मंडल में आपकी ही द्युति है, वह आपसे ही प्रकाशित है। सर्वभक्षी, रौद्र रूप धारण करने वाली अग्नि आपका ही रूप है और आपके उग्र रूप को नमन है। इस श्लोक द्वारा सूर्य की स्तुति करते हुए श्रीराम उन्हें नमन कर रहे हैं।)

प्रसंग है कि रावण से युद्ध करते-करते श्रीराम थक गये और उस समय उस युद्ध को देखने आये महर्षि अगस्त्य ने श्रीराम में नव ऊर्जा का संचार करने के लिए उन्हें सूर्य की स्तुति, आदित्य हृदय स्तोत्र के माध्यम से करने की आज्ञा दी और उसे करने के उपरांत श्रीराम युद्ध में विजयी हुए।

जीवन में चुनौतियां आती हैं और उनसे संघर्ष करने की ऊर्जा सूर्य प्रदान करते हैं। इसीलिए आरंभ से सूर्य पूज्य हैं। ऋग्वेद में सूर्य के संदर्भ में कहा गया है- ***'सूर्य आत्मा जगत्सतथुवश्च।'*** इस जगत के कण-कण में ईश्वर का निवास है। इसका तो सीधा सा अर्थ यही निकलता है कि इस जगत के ईश्वर सूर्य हैं। सूर्य ही जगत की आत्मा है। ईशावास्य उपनिषद में सूर्यदेव की स्तुति पुरुष रूप में की गई है-

'पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापात्य व्यूह
रश्मीन्समूह तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते
पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि'

हे पुष्टि देने वाले, ऋषियों में अनोखे नियम वाले, प्रजाओं के पति सूर्यदेव, आपकी किरणों का समूह चारों ओर फैल रहा है, जिस कारण आप प्रकृति ही मालूम पड़ रहे हैं। अपनी किरणों का मायाजाल समेटिये, जिससे मैं आपके पुरुष रूप का दर्शन कर पाऊं।

उपनिषद् काल की यह प्रार्थना सूर्य षष्टी पूजा में, जिसे छठ पूजा भी कहते हैं, में साकार हो जाती है। बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में छठ पूजा अत्यधिक श्रद्धा और भक्ति से उगते हुए और अस्त होते सूर्य को अर्घ्य देकर मनायी जाती है। गौर करने की बात यह है कि सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य अपनी किरणें समेट लेते हैं। इस पूजा में पुरुष रूप में सूर्य को दीनानाथ और स्त्री रूप में छठी मैया कहकर संबोधित किया जाता है। छठी मैया सूर्यदेव की बहन भी मानी गई हैं।

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्करः

आदि, यानी जहां से कहानी शुरू हुई, सूर्य के कारण ही सृष्टि फल-फूल रही है, बारिश अपने नियत समय पर होती है, पौधे उगते हैं, अन्न पकता है, वायु चलती है, धरती उपजाऊ होती है। जिन पंच महाभूतों से ब्रह्मांड रचा गया है- धरती, आकाश, वायु, अग्नि और जल, उन सबका संचालन सूर्य करते हैं और अग्नि सूरज का ही अंश है। इस कारण से वेद में सूर्य को पहला रुद्र (हिरण्यगर्भ) कहा गया है। इसी हिरण्य (प्रज्ज्वलित) गर्भ में संसार स्थित है और यह हिरण्यगर्भ तीनों लोकों (भूः, भुवः और स्वः) में स्थित है। भूः का अर्थ है यह पृथ्वी लोक, भुवः का अर्थ है अंतरिक्ष लोक और स्वः का अर्थ है स्वर्ग लोक। गायित्री मंत्र में इन तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाले सूर्य से प्रार्थना की गई है और श्री सूक्त में अग्निदेव सूर्य से हिरण्यवर्णां तपे स्वर्ण के समान वर्ण वाली लक्ष्मी का आह्वान किया गया है।

सूर्य उपासना के लाभ

सूर्यदेव सभी प्राणियों के पोषक, दिवा-रात्रि और ऋतु परिवर्तन के कारक हैं। विभिन्न व्याधियों के विनाशक हैं। सूर्य को धन्यवाद देने के लिए ऋषियों ने दिन की शुरुआत सूर्य नमस्कार से करने का नियम स्थापित किया, जिससे कि मनुष्य, जगत प्राण (सूर्य) को अपनी कृतज्ञता प्रकट कर सकें और उनके जीवन में भी सूर्य के समान तेजस्विता स्थापित हो सके। देवताओं की कृपा से ही उनका जीवन सुचारु रूप से चल रहा है।

1. आरोग्य भास्करादिच्छेत

सूर्य साक्षात् देव हैं। वे आरोग्य प्रदाता हैं। अथर्ववेद में वर्णित है कि सूर्य की किरणें हृदय की दुर्बलता, कुष्ठ रोग आदि को दूर करती हैं। पौराणिक ग्रंथों में ऐसा वर्णन है कि श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब को महर्षि दुर्वासा के श्रापवश कुष्ठ रोग हो गया था और तब श्रीकृष्ण ने साम्ब को सूर्य की पूजा करने का निर्देश दिया, जिससे उनका रोग समाप्त हो गया।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी मानता है कि सूर्य की किरणें विटामिन 'डी' का श्रेष्ठतम स्रोत हैं और यह विटामिन अस्थियों को दृढ़ करता है और डिप्रेशन को दूर करने में सहायक है। और तो और, विटामिन डी आपके हृदय की कार्य प्रणाली को भी सुचारू रूप से गतिशील रखता है।

2. चक्षो सूर्यो जायत-यजुर्वेद

सूर्य नारायण जगत के नेत्र हैं। चाक्षुषी विद्या का श्रद्धापूर्वक पाठ करने पर नेत्र रोगों का नाश होता है और नेत्र ज्योति में वृद्धि होती है।

3. आयु प्रदाता एवं वैभवदाता

यजुर्वेद में ऐसी प्रार्थना का उल्लेख है, जिसमें सूर्यदेव से कामना की गयी है कि हम सौ शरद ऋतु देखें, सौ वर्ष जीएं और कभी दरिद्र नहीं हों। ऐसी कथा है कि महाभारत काल में जब पांडव वनवास में भूख-प्यास से पीड़ित थे, तब युधिष्ठिर ने सूर्यदेव के 108 नामों का जप किया, जिससे प्रसन्न होकर सूर्यदेव ने युधिष्ठिर को अक्षय पात्र दिया, जिसमें रखा भोजन कभी समाप्त नहीं होता था।

4. तमोऽरि सर्वपापघ्नं

सूर्यदेव की साधना से शत्रु का नाश संभव हो जाता है। जब श्रीराम भी रावण से युद्ध करते हुए थक गए तो उन्होंने भी आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ किया तथा युद्ध में विजय प्राप्त की और कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन ने भी श्रीकृष्ण की आज्ञा मानकर सूर्य स्तोत्र का जप किया और युद्ध के लिए तत्पर होकर विजय प्राप्त की। वैदिक ऋषि सूर्य से प्रार्थना करते हैं कि **'आप हमारी बुराइयों और पापों को नष्ट करें एवं मंगल का पथ प्रशस्त करें'** फिर हम क्यों सूर्य कृपा से वंचित रहें?

सूर्य से ही पृथ्वी पर जीवन है, प्रकाश है। हमारी आत्मा में जो प्रकाश है, वह भी सूर्य का ही प्रतिबिम्ब है और सूर्य की इस जगत के प्रति अभूतपूर्व संवेदना है। जिस दिन सूर्योदय नहीं होता, उस दिन पूरी सृष्टि की लय टूट जाती है। सूर्य साधना द्वारा आप जगत की आत्मा (ब्रह्म) से जुड़ते हैं और वह क्षण जीवन को महानता की ओर ले जाता है।

सूर्य षष्टी पर्व - एक तपस्या

छठ महोत्सव मात्र एक उत्सव न होकर एक तपस्या है। तीन दिनों तक चलने वाले इस पर्व में व्रती सूर्य नारायण के समक्ष उनकी प्रसन्नता हेतु कठिन व्रत रखकर अत्यंत कठिन नियमों का पालन करते हुए तपश्चर्या करते हैं। यह सृष्टि तप के प्रभाव से ही चल रही है। उपनिषद्कारों ने तप को क्रिया का उग्रतम रूप माना है और सृष्टि के आरंभ से सूर्य क्रियारत हैं। प्रतिदिन निश्चित समय पर उदित होते हैं और जब उनके अस्त होने का आभास होता है, उस समय वह कहीं और उदित हो रहे होते हैं। सूर्य तेजस्विता साधना संपन्न करने का श्रेष्ठतम मुहूर्त्त छठ का दिन है, क्योंकि तप में जब साधना का बल आता है, तब वह सौ गुना प्रभावी हो जाता है।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

जीईएम पर 10 हजार करोड़ रुपए का खरीद मूल्य पार करने वाला पहला सीपीएसई बना सेल

संवाददाता

नई दिल्ली/बोकारो : स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) गवर्नमेंट-ई-मार्केटप्लेस (जीईएम) की स्थापना के बाद से जीईएम के माध्यम से 10,000 करोड़ रुपये के खरीद मूल्य (प्रोक्योरमेंट वैल्यू) को पार करने वाला पहला केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम (सीपीएसई) बन गया है।

सेल की ओर से यहां बोकारो स्टील के संचार प्रमुख मणिकांत धान ने उक्त जानकारी देते हुए इसे सेल के लिए एक बड़ी उपलब्धि बताई। उन्होंने बताया कि जीईएम के साथ साझेदारी करने में सेल सबसे आगे रहा है। सेल ने जीईएम पोर्टल की पहुंच बढ़ाने के लिए इसकी विभिन्न कार्यक्षमताओं को बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई है।

2.7 करोड़ रुपये की खरीद से हुई थी छोटी शुरुआत

सेल ने जीईएम पोर्टल में वित्त वर्ष 18-19 में 2.7 करोड़ रुपये की खरीद कर एक छोटी सी शुरुआत की थी, जो इस साल 10,000 करोड़ रुपये के कुल मूल्य को पार कर चुकी है। संयोग से सेल पिछले वित्त वर्ष में रु 4,614 करोड़ के कारोबार के साथ जीईएम पर सबसे बड़ा सीपीएसई खरीदार था। अब तक 5,250 करोड़ रुपये से अधिक की खरीद के साथ चालू वित्त वर्ष में सेल पहले ही पिछले वर्ष की उपलब्धि को पार कर चुका है और सेल जीईएम पर वॉल्यूम बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। सेल को भारत सरकार की इस डिजिटल पहल का ध्वजवाहक होने पर गर्व है।

अमिताभ और कादर खान के बीच इस वजह से नहीं रहे अच्छे संबंध

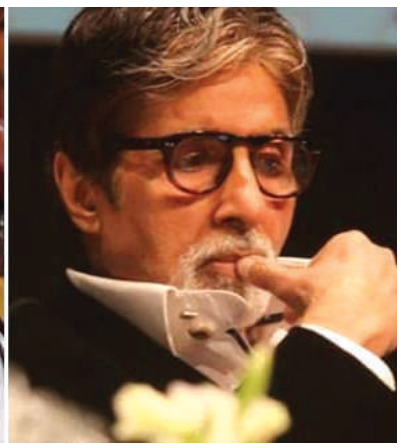

फिल्मी सितारों की चमक-दमक के पीछे कहीं न कहीं आपसी मनमुटाव और रिश्तों की खटास भी काफी छिपी हुई है। हरफनमौला अभिनेता कादर खान और महानायक अमिताभ बच्चन के बीच अच्छे रिश्ते नहीं होने का कारण शायद बहुत कम लोग जानते होंगे। इन दिनों सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे कादर खान के पुराने इंटरव्यू में इसका खुलासा हुआ। इस वीडियो में कादर खान अमिताभ बच्चन के रिश्ते सही नहीं होने का कारण बताते दिखे। इंटरव्यू के मुताबिक कादर खान अमिताभ बच्चन को अमित कहकर बुलाया करते थे। वे आपस में बहुत अच्छे मित्र कभी हुआ करते थे। एक बार साउथ के एक प्रोड्यूसर ने उन्हें बुलाया। बकौल कादर, प्रोड्यूसर ने कहा - आप सर जी से मिले? मैंने कहा- कौन सर जी? 'आपको सर जी नहीं मालूम?', प्रोड्यूसर ने कहा। बाद में मैंने देखा अमितजी हमारी तरफ आ रहे थे। मैंने कहा- यार वह तो अमित है, सर जी कब से हो गया? प्रोड्यूसर ने कहा- 'हां हम उन्हें सर जी ही बोलते हैं।' और सब ने 'सर जी' बोलना शुरू कर दिया था। मेरे मुंह से 'सर जी' नहीं निकला। वह 'सर जी' न निकलने से मैं निकल गया उस ग्रुप से। यह कैसी बात है? क्या किसी कोई आदमी, अपने दोस्त को, अपने भाई को किसी और नाम से पुकार सकता है? नामुमकिन बात है यह। मैं नहीं कर सका वह, इसलिए शायद फिर मेरा उनसे वह राब्ता नहीं रहा। इसलिए 'खुदा गवाह' में मैं नहीं था। फिर 'गंगा, जमुना, सरस्वती' मैंने आधी लिखी, आधी छोड़ दी। फिर उसके बाद कुछ फिल्में हैं, वो आखिर-आखिर की जो मैंने नहीं लिखी थी, वह छोड़ दी।

उस जमाने में जब 'कूली' बन रही थी और मैं आखिरी दिन जब शूट करके वहां से निकल ही रहा था तो मुझे अमित जी ने आवाज दी और कहा कि 'तुम एक काम करो, तुम आज जाओ। तुम्हारा तो पैकअप हो गया है। तो तुम परसों एक बार वापस आ जाना। हमलोग यहीं पर तुम्हारी फिल्म का अनाउंसमेंट कर देंगे, बल्कि मुहूर्त ही कर देंगे। मैंने कहा- अच्छी बात है। मैं परसों जाने की तैयारी में था, तो अमिताभ के भाई अजिताभ बच्चन का फोन आया कि 'आप मत जाइए, दा को चोट लगी है पेट में। मैंने कहा- अरे कैसे? - उन्होंने कहा- 'कल शूट कर रहे थे तो चोट लग गई। वह ठीक नहीं हैं।' दो दिन बाद रुककर गया, तो फिर फोन आया कि अब वो अनाप-शनाप बक रहे हैं। मैं घबराया। अगली फ्लाइट से वहां पहुंच गया। वाकई वह काफी बुरी हालत में थे। उसके बाद हम उनको मुंबई ले आए। यहां ब्रिज कैंडी में उनको भर्ती कराया गया। जाने का प्लान किया, तो फिर उनका फोन आया कि अरे वह घाव काफी खराब हो चुका है।

बड़ी मुद्दत के बाद वह अच्छे हुए। फिर इंदिरा गांधी की हत्या हो गई। राजीव गांधी के सिर पर हुकूमत आयी। चुनाव हुआ तो फिर इनको (अमिताभ) बुला लिया गया, अमिताभ ने जाकर ज्वाइन किया तो वह एमएलए बन गए, एमपी बन गए। एमपी बन गए तो फिर वहां से उनकी लाइफ चेंज हो गई। फिर मेरा और उनसे वह राब्ता नहीं रहा, जो पहले हुआ करता था। वह मेरा बिल्कुल दोस्त था। लंगोटिया यार जिसे कह सकते हैं।

गुदगुदी

एक दोस्त दूसरे दोस्त से- अच्छा, ये बताओ दीपावली पर फोड़े जानेवाले पटाखों में रॉकेट से क्या सीख मिलती है?

दूसरा दोस्त- यही कि जीवन में अगर ऊंचाइयों को छूने के लिए बोतल का सहारा लेना जरूरी है।

बापू - तू फेल कैसे हो गया?

बेटा - बापू पेपर में सवाल ही ऐसे-ऐसे आए थे जो मुझे पता नहीं थे।

बापू - फिर तूने उत्तर कैसे लिखे?

बेटा - मैंने भी उत्तर ऐसे-ऐसे लिखे, जो मास्टर को भी पता नहीं थे।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल तो पैदल है जाना
तब संभव जंगल को पाना
बतियाना जंगल से खुलकर
पत्ते-पत्ते से घुल-मिलकर
ऐसे लोगों के मन रहती
है जंगल की यादों की रसधार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल।

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल में चुपचाप चलोगे
बिना किए पदचाप चलोगे
हिस्सा जंगल का हो जाना
उत्तर समाधि में खो जाना
ऐसा जो कर सको यज्ञ तो
वन देगा ना-ना प्रकार उपहार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

कुमार मनीष अरविन्द

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

अब अंग्रेजों पर 'भारतीय-हुकूमत'

ऋषि सुनक के ब्रिटेन का प्रधानमंत्री बनने पर भारत में हर्ष, लोगों ने कहा- घूमता है वक्त का पहिया

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : किसी ने सच ही कहा है कि वक्त पहिया है। समय का चक्र घूमता रहता है और विश्व के इतिहास में एक बार फिर वक्त ने नई इबारत लिख डाली। दो वर्षों तक भारत में हुकूमत कर हमें गुलामी की जंजीरों में जकड़े रखने वाले ब्रिटिश शासकों के लिए आज हालात उल्टे हैं। आज उसी ब्रिटेन में भारतीय-हुकूमत काबिज हो चुकी है। इतिहास में पहली बार यह कर दिखाया है ऋषि सुनक ने। भारतीय मूल के ऋषि भारतीय मूल के पहले ब्रिटिश प्रधानमंत्री के रूप में कार्यभार संभाल लिया। इससे पहले उन्हें दिवाली के दिन निर्विरोध कंजर्वेटिव पार्टी का नया नेता चुना गया था। महाराजा चार्ल्स तृतीय ने उन्हें ब्रिटेन के 57वें प्रधानमंत्री के रूप में नयी सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। ब्रिटेन के पूर्व वित्त मंत्री सुनक (42) हिन्दू हैं और वह पिछले 210 साल में ब्रिटेन के सबसे कम उम्र के प्रधानमंत्री हैं। यह निश्चय ही हर भारतवासी के लिए गर्व की बात है। खास बात यह है कि ऋषि की अपने हिन्दू धर्म में गहरी आस्था है। ब्रिटेन में हिन्दुस्तानी सनातन संस्कृति का झंडा बुलंद करते हुए ऋषि ने पीएम बनने के बाद अपना पहला भाषण हाथ में मौली बांधकर दिया। सोशल मीडिया उनकी पर गो-पूजा का वीडियो भी वायरल हो रहा है।

उल्लेखनीय है कि वह 2015 में पहली बार रिचमॉन्ड, यॉर्कशायर के सांसद बने थे और तब उन्होंने हाउस ऑफ कामंस में भगवत गीता पर हाथ रखकर शपथ ली थी। भले ही उनके पूर्वज ब्रिटेन में जाकर बस गए, परंतु जिस तरह उन्होंने अपनी संस्कृति से जुड़ाव बनाए रखा, वह अंग्रेजों के बीच भारत की सशक्त उपस्थिति से कम नहीं। ... और अब जब ऋषि ने वहां के प्रधानमंत्री की कमान संभाल ली है, तो यह भारतीयता और हिन्दुत्व के लिए गर्व की बात है।

1961 में छेदी जगन ने शुरू किया था सत्ता पर काबिज होने का सिलसिला

दरअसल, भारतवासी जहां भी रहे हैं, अपना असर जरूर दिखाते हैं। संसद का चुनाव कनाडा का हो, ब्रिटेन का हो या फिर किसी अन्य लोकतांत्रिक देश का, भारतीय उसमें अपना असर दिखाने से पीछे नहीं रहते। उन्हें सिर्फ वोटर बने रहना नामंजूर है। वे चुनाव भी लड़ते हैं। हिन्दुस्तानी सात समंदर पार मात्र कमाने-खाने के लिए ही नहीं जाते। वहां पर जाकर हिन्दुस्तानी सत्ता पर काबिज होने की भी भरसक कोशिश करते हैं। अगर यह बात न होती तो लगभग 22 देशों की पार्लियामेंट में 182 भारतवंशी सांसद न होते। बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि आज ऋषि सुनक ने जिस कड़ी में एक नया अध्याय जोड़ा है, उसकी शुरूआत छेदी जगन ने की थी। 1961 में वह सुदूर कैरिबियाई टापू देश गयाना का प्रधानमंत्री बन गए थे। उन्होंने जो सिलसिला शुरू किया था, वह आज भी जारी है। इसी सिलसिले को मॉरीशस में शिवसागर रामगुलाम से लेकर अनिरुद्ध जगन्नाथ, त्रिनिदाद और टोबैगो में वासुदेव पांडे, सूरीनाम में चंद्रिका प्रसाद संतोखी, अमेरिका में कमला हैरिस और ग्रेट ब्रिटेन में सुनक ने आगे बढ़ाया, वह निरंतर चलता रहेगा। भारतवंशी भारत से बाहर भी राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री बन हिन्दुस्तान का पताका लहराते रहेंगे।

इंफोसिस फाउंडर के दामाद हैं सुनक

ऋषि सुनक भारत की सबसे प्रतिष्ठित आईटी कंपनियों में से एक इंफोसिस के फाउंडर चेयरमैन एन. नारायणमूर्ति के दामाद हैं। नारायणमूर्ति की पुत्री अक्षिता तथा सुनक स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी में सहपाठी थे। सुनक के पुरखे वैसे तो मूल निवासी पंजाब से हैं। वे पूर्वी अफ्रीकी देश केन्या में करीब 100 साल पहले बस गए थे। उनके पिता यशवीर का जन्म केन्या और मां का जन्म तंजानिया में हुआ था। हिन्दी और पंजाबी भी जानने वाले सुनक का परिवार 1960 के दशक में ब्रिटेन शिफ्ट कर गया था। बेहद सौम्य और मृदुभाषी ऋषि सुनक के ग्रेट ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बन जाने के बाद यह ध्यान रखना होगा कि वह सबसे पहले अपने देश ब्रिटेन के हितों का ही ख्याल रखेंगे। जाहिर है, उन्हें यह करना भी चाहिए। लेकिन, इतना तो जरूर है कि उनका भारत से भावनात्मक संबंध बना ही रहेगा। जब सारा भारत दिवाली मना रहा था तब सुनक के ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बनने का समाचार आते ही भारतीयों की दिवाली की खुशी दोगुनी बढ़ गई।

भारत से 32 हजार मजदूरों को ले गए थे गोरे शासक, आज वही पलट रहे पासा

जानकारों के अनुसार गोरे शासक सन 1824 से लेकर 1901 के बीच करीब 32 हजार मजदूरों को भारत के विभिन्न राज्यों से केन्या, तंजानिया, युंगाडा मॉरीशस, सूरीनाम , फिजी आदि देशों में लेकर गए थे। इन्हें रेल पटरियों को बिछाने के लिए और गन्ने की खेती के लिए ले जाया गया था। इनमें पंजाब, बिहार और उत्तर प्रदेश के सर्वाधिक मजदूर थे। पूर्वी अफ्रीका का सारा रेल नेटवर्क पंजाब के लोगों ने ही तैयार किया था। इन्होंने बेहद कठिन हालतों में रेल नेटवर्क तैयार किया। ऋषि सुनक के पुरखे भी पंजाब के मूल निवासी थे। आज वही श्रमिक पासा पलट रहे है। ब्रिटेन को 1840 के दशक में गुलामी प्रथा का अंत होने के बाद श्रमिकों की जरूरत पड़ी, जिसके बाद भारत से मजदूर बाहर के देशों में जाने लगे। बेशक भारत के बाहर जाने वाला प्रत्येक भारतीय अपने साथ एक छोटा भारत लेकर जाता था। गीता, रामचरित मानस, हनुमान चालीसा आदि उनके साथ होता था। भारतवंशी अपने साथ तुलसी रामायण, भाषा, खान पान एवं परंपराओं के रूप में भारत की संस्कृति लेकर गए थे। उन्हीं मजदूरों की संतानों के कारण फिजी, त्रिनिदाद, गयाना, सूरीनाम और मॉरीशस लघु भारत के रूप में उभरे। इन श्रमिकों ने कमाल की जीवटता दिखाई और घोर परेशानियों से दो-चार होते हुए अपने लिए जगह बनाई। इन भारतीय श्रमिकों ने लंबी समुद्री यात्राओं के दौरान अनेक कठिनाइयों को झेला। अपने देश से हजारों किलोमीटर दूर जाकर बसने के बावजूद इन्होंने अपने संस्कारों को कभी छोड़ा नहीं। इनके लिए अपना धर्म, भाषा और संस्कार बेहद खास थे। ऋषि सुनक का हालांकि जन्म ब्रिटेन में हुआ पर वे एक संस्कारी हिन्दू हैं। वे अपने परिवार और हिन्दू धर्म के संस्कारों से पूरी तरह जुड़े हुए हैं।